Answers to RSPL/1

खंड–क

1. (क) पूर्वजों के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सपने को साकार करने में इंटरनेट एवं संचार के अन्य साधनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, क्योंकि इन साधनों ने दुनिया का हर कोना एक-दूसरे से जोड़ दिया है। आज विश्व के सभी देशों के लोग अन्य देशों के सुख-दुख से प्रभावित होते हैं तथा स्वयं को विश्वबंधुत्व की पवित्र डोर से बँधा हुआ महसूस करते हैं।

(ख) 'किसी की भुखमरी से हमारी आँखें नम हो जाती हैं और हम भी अपना निवाला नहीं निगल पाते हैं, विश्व के कुछ देशों में हो रहे नारी-उत्पीड़न से मन आक्रोश से भर उठता है और संसार का हर कोना मानो सजीव होकर मदद के लिए आगे आ जाता है।' अनुच्छेद में विश्वबंधुत्व की बढ़ती हुई भावना को दर्शाने वाले कुछ उदाहरण हैं। वास्तव में, आज विश्वभर में घटित हो रही घटनाओं पर पूरा विश्व एकजुट दिखाई देता है।

(ग) संकीर्ण व कट्टरवादी मानसिकता से भरे हुए लोग विश्वबंधुत्व की भावना के लिए चिंता का विषय इसलिए हैं, क्योंकि ऐसे लोग यह नहीं चाहते कि विश्व में सभी लोग मिलजुलकर रहें। वे अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए मारकाट व खून-ख़राबे का घिनौना खेल खेलकर आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे विश्व भय के वातावरण में जीने के लिए विवश हो रहा है।

(घ) 'आतंकवाद जड़ से खत्म हो जाएगा।' इस विश्वास का आधार विश्व के सभी देशों का आतंकवाद के खिलाफ़ एकजुट हो जाना है।

(ङ) रचना के आधार पर यह वाक्य मिश्र वाक्य के अंतर्गत आता है।

2. (क) कवि ने गंगा-यमुना आदि पवित्र नदियों, पर्वतमालाओं, अद्‌भुत हरियाली आदि प्रकृति द्‌वारा प्रदान किए गए अप्रतिम उपहारों के कारण देश को सुंदर बताया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक देशवासी की देश को फलते-फूलते देखने की इच्छा से भी देश को सुंदर आकार मिलता है।

(ख) जीवन का एक-एक पल तब पर्व बन सकता है, जब व्यक्ति अपनी खुशियाँ केवल अपने तक सीमित न करके दूसरों के साथ बाँटे और सोचे कि उसके जैसा खुशहाल जीवन सबका हो और जब मिलकर सुख से जिएँ।

(ग) 'गीता, रामायण.....खिलकर मुस्काएँ।' पंक्तियों में कवि देश के परिवेश को सदाचार व सद्‌भाव से परिपूर्ण बनाने की अभिलाषा कर रहा है। वह चाहता है कि देश के प्रत्येक नागरिक का मन सद्‌विचारों व नैतिक जीवन-मूल्यों से भरा रहे तथा स्वार्थ, लोभ, छल, दंभ आदि दोषों से दूर रहे।

(घ) कविता से हमें देशहित में नैतिक मूल्यों को अपनाने तथा सदाचार व सद्‌भाव से परिपूर्ण रहकर सबके हित को ध्यान में रखने का संदेश मिलता है।

(ङ) सदाचार और सद्‌भाव–द्‌वंद्‌व समास।

खंड–ख

3. (क) जो लोग झूठ बोलते हैं, उन पर सगे-संबंधी तक विश्वास नहीं करते।

(ख) मुझे पहले जामनगर जाना है और उसके बाद अहमदाबाद।

(ग) मिश्र वाक्य।

4. (क) उनके द्‌वारा प्रतिदिन सुबह को पास के गाँव से दूध लाया जाता है।

(ख) मुझसे इतना ऊँचा नहीं कूदा जा सकता है।

(ग) आओ, कुछ खेलें।

(घ) कर्मवाच्य।

5. (क) **मानवता** – भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक।

(ख) **कुछ** – अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, विशेष्य–'खिलौने'।

(ग) **प्रतिदिन** – कालवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया–'करना चाहिए'।

(घ) **लिख रहा था** – सकर्मक क्रिया, अपूर्ण भूतकाल।

6. (क) करुण रस के संचारी भाव– विषाद, वितर्क एवं स्मृति आदि हैं।

(ख) अद्‌भुत रस से संबंधित काव्य-पंक्तियाँ–

राग है कि, रूप है कि
रस है कि, जस है कि
तन है कि, मन है कि
प्राण है कि, प्यारी है

(ग) वात्सल्य रस का स्थायी भाव 'वत्सल' है।

(घ) शृंगार रस (संयोग शृंगार)

खंड–ग

7. (क) लेखक ने खाली समय में बैठे-बैठे कल्पना करते रहने की अपनी पुरानी आदत का उल्लेख प्रस्तुत गद्‌यांश में किया है। अपनी कल्पना करते रहने की आदत के कारण ही वे वहाँ बैठे नवाब साहब को होने वाली असुविधा एवं संकोच के कारण का अनुमान करने लगे।

(ख) नवाब साहब की असुविधा ओर संकोच का कारण यह था कि सेकंड क्लास का टिकट लेते समय शायद उन्होंने सोचा होगा कि वे बिल्कुल अकेले यात्रा करेंगे अर्थात् उन्हें मँझले दर्ज़े में सफ़र करते हुए शहर का कोई सफ़ेदपोश व्यक्ति नहीं देख सकेगा, लेकिन यात्रा के दौरान लेखक ने अपनी मौज़ूदगी से नवाब साहब की सोच को झूठा साबित कर दिया।

(ग) नवाब साहब ने खीरा तो खरीद लिया था, लेकिन लेखक के सामने उसे खाने में झिझक रहे थे। उन्हें लग रहा था कि एक सफ़ेदपोश उन्हें खीरा खाते हुए देखकर उनके स्तर के बारे में क्या सोचेगा?

8. (क) एक दिन शाम के समय गीत गाते समय बालगोबिन भगत का स्वर बिखरा हुआ लग रहा था। अगले दिन भोर में किसी ने भी उनका गीत नहीं सुना, क्योंकि वे परलोक गमन कर चुके थे। भगत जी अंतिम क्षण तक संगीत साधना में लीन रहे और ऐसा ही वे चाहते थे। वे स्वयं को साधु मानते थे और साधु को किसी भी तरह का संबल लेने का क्या हक था? उनका मानना था कि गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे? इसी कारण उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी न तो किसी से कुछ लिया और न ही किसी के आश्रित रहे। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने ढंग से खेती-बाड़ी, पूजा-पाठ, योग-ध्यान आदि करते हुए एक आदर्श गृहस्थ की तरह से जिया और मरने के समय तक उन्होंने अपने नियमों का, सिद्‌धांतों का निष्ठापूर्वक पालन किया। उनकी मौत उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही शांत एवं सौम्य ढंग से हुई।

(ख) नेताजी की मूर्ति पर लगा सरकंडे का चश्मा वास्तव में नई पीढ़ी की देशभक्ति का प्रमाण था। कैप्टन की मृत्यु हो जाने के बाद हालदार साहब को यह लगने लगा कि अब नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाकर संपूर्ण या आदर्श रूप देने वाला चला गया। अब यहाँ किसी को इसकी चिंता या परवाह नहीं होगी कि मूर्ति पर चश्मा लगा है या नहीं? लेकिन हालदार साहब का यह भ्रम गलत साबित हुआ। नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाने वाली नई पीढ़ी भी अपने अंदर देशभक्ति का वही भाव लिए हुए है, जो कैप्टन के अंदर था। बिना चश्मे के नेताजी की मूर्ति की समग्रता की कल्पना नहीं की जा सकती और इसी सोच ने नई पीढ़ी को नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाने के लिए प्रेरित किया।

(ग) फ़ादर बुल्के मन से संन्यासी नहीं थे, क्योंकि वे पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों को संजीदगी के साथ निभाते थे। वे सभी के साथ हँसी-मज़ाक में शामिल रहते, गोष्ठियों में गंभीर बहस करते, रचनाओं पर बेबाक सुझाव देते और घरों के उत्सवों एवं

संस्कार में बड़े भाई और पुरोहित की तरह भागीदारी करते। वास्तव में, वे संकल्प से संन्यासी थे, मन से नहीं। वे जब रिश्ता बनाते थे, तो उसे तोड़ते नहीं थे। वह किसी भी तरह अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर अधिक-से-अधिक परिचितों के साथ मुलाकात करते और अपने संबंधों को पुनर्जीवित करते।

(घ) बिस्मिल्ला खाँ जी प्रस्तुत कथन के माध्यम से युवावर्ग को यह संदेश देना चाहते हैं कि सभी को अपने कर्म के प्रति निष्ठा रखनी चाहिए। संसार में व्यक्ति की कद्र उसके काम के कारण होती है। सभी को अपने काम के प्रति इतना निष्ठावान होना चाहिए कि वह अपने क्षेत्र में बहुत आगे निकल जाए। पोशाक या बाहरी दिखावा क्षणभर के लिए अन्य व्यक्तियों को अपनी ओर आकृष्ट कर सकता है, लेकिन किसी व्यक्ति को असली लोकप्रियता उसके कामों से प्राप्त होती है। आधुनिक युग में बाह्य आडंबरों एवं फ़ैशन के पीछे दौड़ रहे युवावर्ग को यही संदेश दिया जा रहा है कि वे अपने कामों के प्रति निष्ठावान रहें, बाहरी तड़क-भड़क एवं फ़ैशन से कुछ हासिल होने वाला नहीं।

9. (क) एक गायक के लिए संगतकार एक सच्चा मित्र एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। वह मुख्य गायक के बिखरते स्वर को समेटता है और उसके डूबते हुए आत्मविश्वास को बचाता है। वह अपने मानवतावादी विचारों के कारण मुख्य गायक के प्रभाव को बढ़ाता है और स्वयं को गौण बनाए रखता है।

(ख) संगतकार अपने स्वर को ऊँचा नहीं उठने देता है, क्योंकि वह मुख्य गायक के प्रभाव को कम होने देना नहीं चाहता है। यह उसकी मनुष्यता है, उसकी मानवीयता है, जिसके कारण वह अपनी आवाज़ को दबाकर रखता है ताकि मुख्य गायक के स्वर का महत्त्व कहीं कम न हो जाए।

(ग) जब मुख्य गायक की आवाज़ से तेज़ी एवं गंभीरता समाप्त होने लगती है, तार सप्तक के कारण उसका गला बैठने लगता है या जब गीत गाने की प्रेरणा समाप्त होने लगती है, तब इन विकट परिस्थितियों में संगतकार मुख्य गायक का साथ देता है।

10. (क) प्रस्तुत पंक्ति में 'तुम' शब्द उन ढोंगी एवं दिखावटी मित्रों के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो कवि की दयनीय स्थिति जानकर प्रसन्न होंगे। कवि ने इस पंक्ति के माध्यम से अपने उन मित्रों पर व्यंग्य किया है, जो बाहर से मित्रता का दंभ भरते हैं और अंदर-ही-अंदर कवि की खराब स्थिति का आनंद लेते हैं। धोखा देने वाले ऐसे विश्वासघाती मित्रों की कलई खुल सकती है।

(ख) माँ चाहती है कि बेटी में लड़कियों वाले नैसर्गिक गुण तो हों, परंतु उसमें ऐसे गुण नहीं हों, जिससे यह पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था उसका शोषण कर सके। उसमें अत्यधिक सहनशीलता, शारीरिक कमज़ोरी, कायरता आदि जैसी स्त्रैण प्रवृत्तियाँ न हों। वह आदर्शवादी बहू-पत्नी-माँ के साथ-साथ यथार्थवादी स्त्री भी बने, ताकि कभी-भी वह अपने विरोधियों को अपने उपर हावी न होने दे।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने फ़सल को समूची प्रकृति एवं लाखों-करोड़ों मनुष्यों के श्रम के प्रतिफल के रूप में परिभाषित किया है। 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' कहकर कवि यह व्यक्त करना चाहता है कि फ़सल के फलने-फूलने में एक-दो लोगों का नहीं, अपितु लाखों-करोड़ों लोगों के हाथों का स्पर्श इसे गरिमा प्रदान करता है।

(घ) गोपियों ने उद्धव की तुलना जल में रहकर भी जल से निर्लिप्त रहने वाले कमल के पत्ते तथा तेल की गागर से इसलिए की, क्योंकि जिस तरह कमल के पत्ते एवं तेल की गागर पर पानी की बूँदों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, ठीक उसी तरह श्रीकृष्ण रूपी प्रेम के सागर, जीवनप्रदायी प्रेम के निरंतर संसर्ग में रहते हुए भी उद्धव उससे अप्रभावित रहे। उन्होंने श्रीकृष्ण के संपर्क में रहते हुए भी प्रेम का रस नहीं चखा, यह उनका दुर्भाग्य है।

11. हिरोशिमा में सब कुछ देखकर भी लेखक ने प्रत्यक्ष अनुभूति के अभाव में तत्काल कुछ नहीं लिखा था, लेकिन एक दिन अचानक सड़क पर घूमते हुए उन्होंने देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली मानव छाया है। उन्होंने अनुमान कर लिया कि विस्फोट के दौरान वहाँ कोई खड़ा रहा होगा, जिसे विस्फोटक किरणों ने भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। यह सोचकर लेखक को एक थप्पड़-सा महसूस हुआ और वह अवाक रह गया। पलभर में ही इतिहास का वह दृश्य उनके अंतर्मन में कौंध गया। इस आत्मानुभूति से लेखक हिरोशिमा विस्फोट का भोक्ता बन गया।

यदि मैं लेखक की जगह होता, तो मेरी दशा भी वैसी ही होती, जैसी लेखक ही हुई थी। विज्ञान के इस दुरुपयोग और मानवता के प्रतिकूल हुई इस घटना की अनुभूति की प्रतिक्रियास्वरूप मेरी लेखनी से भी संवेदनात्मक अंकुर फूट पड़ते।

अथवा

'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, उसमें उनके खेल, कौतूहल, माँ की ममता, पिता का दुलार आदि शामिल हैं। हमारे बचपन की दुनिया इससे नितांत भिन्न है, क्योंकि इसमें कृत्रिता का समावेश है। पाठ में ग्राम्य जीवन और संस्कृति का प्राकृतिक चित्रण है, जबकि हम शहरी जीवन जीने के अभ्यस्त हैं। उन बच्चों के माता-पिता उन्हें खिलाने, सुलाने, उनके साथ खेलने आदि में पूरा समय देते थे, जबकि इस दुनिया में माता-पिता अपनी व्यस्तता के कारण बच्चों को वक्त न देने की कमी को आधुनिक खिलौने, खेल-सामग्री, कंप्यूटर, वीडियो-गेम्स, मोबाइल, टैब आदि उपकरण देकर पूरा करते हैं। इसी से उनका वात्सल्य संतुष्ट हो जाता है। उन बच्चों में मैत्री की भावना थी, लेकिन आजकल के बच्चे अकेले रहने के अभ्यस्त होने लगे हैं। जीवन-शैली में बदलाव होने तथा पड़ोस-कल्चर खत्म होने कारण आज बच्चे पड़ोस एवं मुहल्लों में भी खेलने नहीं जा पाते।

खंड–घ

12. (क) **खुले में शौच से मुक्त भारतः एक चुनौतीपूर्ण संकल्प**

देश में आज भी खुले में शौच आम बात है। गाँवों से लेकर शहरों तक में यह जारी है। पूरे भारत को खुले में शौच से मुक्त करने का अभियान चलाया गया है। प्रधानमंत्री जी की अपील और शहरी विकास मंत्रालय की योजनाओं से देश के कई राज्यों में कुछ जिले खुले में शौच से अपने को पूरी तरह से मुक्त करने में लगे हैं। खुले में शौच के कारण कई बीमारियाँ फैलती रही हैं। खुले में शौच से हमारे वातावरण में वायु-प्रदूषण तो फैलता ही है, ठोस मल पानी में बहकर जल को प्रदूषित करता है। यह जल हमारे स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित करता है। जलजनित बीमारियों के कारण ही खुले में शौच से जल-प्रदूषण होता है, जिससे कई तरह के कीटाणु फैलते हैं। प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर देश के विद्यालय, स्थानीय पंचायत से लेकर नगर निगम तक इस अभिशाप से देश को मुक्त करने में लगे हैं। विशेषज्ञों एवं पर्यावरणविदों का मानना है कि खुले में शौच से यदि देश मुक्त हो जाए, तो देश में वायु और जल-प्रदूषण में कुछ कमी आ सकती है। अभी तक गाँवों में सरकार के प्रयास से बने शौचालय प्रयोग में कम ही थे। ढेर सारे शौचालय तो गोदाम बन गए हैं। इसका कारण जागरुकता का अभाव है। गाँव के ग्रामीण ही नहीं, शिक्षित शहरी क्षेत्रों में भी जागरुकता की कमी है। इस कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दृष्टिकोण, स्वच्छ भारत मिशन के लिए ग्रामीण स्वच्छता तथा वर्ष 2019 तक खुले में शौच मुक्त भारत बनाने के अभियान में योगदान देने के लिए सड़कों पर निकलने वाले सभी सरकारी और ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ता वास्तव में बधाई के पात्र हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के मुताबिक विश्व में प्रतिवर्ष करीब 6 करोड़ लोग डायरिया से पीड़ित होते हैं, जिनमें से 40 लाख बच्चों की मौत हो जाती है। डायरिया का मुख्य कारण गंदा जल और हमारे आसपास की गंदगी है। खुले में पड़े हुए मल-मूत्र से न केवल भूजल प्रदूषित होता है, बल्कि कृषि उत्पाद भी इस प्रदूषण से अछूते नहीं रहते हैं। यह डायरिया, हैज़ा, टाइफाइड जैसी घातक बीमारियों के कीटाणुओं को भी फैलाता है। उचित शौचालय न केवल प्रदूषण और इन बीमारियों से बचने के लिए ज़रूरी हैं, बल्कि साफ़-सुधारे सामुदायिक पर्यावरण के लिए भी जरूरी हैं। विकासशील देशों में कई बीमारियों का कारण गंदगी है, जिसमें जल-प्रदूषण सर्वप्रमुख है। शौचालय बनवाने के साथ ही हमें देश के शहरों की सीवेज सिस्टम को भी सुधारना होगा। आज हमारे देश के सारे शहरों का मल एवं कचरा बिना शोधित किए नदियों में डाल दिया जाता है, जिससे हमारे देश की गंगा और यमुना जैसी बड़ी नदियाँ भी गंदे नाले जैसी बन गई हैं। शौचालय एवं सीवेज सिस्टम को सुधारकर हम एक साथ कई मोर्चों को सुधार सकते हैं।

(ख) **यह ज़िंदगी का फूल तो आँधी में खिलेगा/मानव जीवन में संघर्ष का महत्त्व**

संघर्ष ही जीवन है। जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है। इस सृष्टि में छोटे-से-छोटे प्राणी से लेकर बड़े-से-बड़े प्राणी तक, सभी किसी-न-किसी रूप में संघर्षरत हैं। जिसने संघर्ष करना छोड़ दिया, वह मृतप्राय हो गया। जीवन में संघर्ष है प्रकृति के साथ, स्वयं के साथ एवं परिस्थितियों के साथ। तरह-तरह के संघर्षों का सामना आए दिन हम सबको करना पड़ता है और इनसे जूझना

होता है। जो इन संघर्षों का सामना करने से कतराते हैं, वे जीवन में हार जाते हैं और जीवन भी उनका साथ नहीं देता।

सफलता की चाहत तो सभी करते हैं, लेकिन उस सफलता को पाने के लिए किए जाने वाले संघर्षों से कतराते हैं। जीवन में मिलने वाली सफलता सबको आकर्षित भी करती है, लेकिन उस सफलता की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष को कोई नहीं देखता, न ही उसकी ओर आकर्षित होता है, जबकि सफलता तक पहुँचने की वास्तविक कड़ी यह संघर्ष ही है। हम जिन व्यक्तियों को सफलता की ऊचाइयों पर देखते है, उनका भूतकाल अगर हम देखें तो हमें जानने को मिलेगा कि यह सफलता उन्हें बहुत संघर्ष से प्राप्त हुई है।

वास्तव में जब व्यक्ति अपने संघर्षों से दोस्ती कर लेता है, प्रसन्नता के साथ उन्हें अपनाता है, उत्साह के साथ चलता है, तो संघर्ष का सफ़र उसका साथ देता है और उसे कठिन-से-कठिन डगर को पार करने में मदद करता है। लेकिन यदि व्यक्ति ज़बरन इसे अपनाता है, बेरुखी के साथ इस मार्ग पर आगे बढ़ता है, तो वह भी ज्यादा दूर तक नहीं चल पाता, बड़ी कठिनाई के साथ ही वह थोड़ा-बहुत आगे बढ़ पाता है। जब जीवन में एवरेस्ट जैसी मंज़िल हो और उस तक पहुँचने के लिए कठिन संघर्षों का रास्ता हो, तो घबराने से बात नहीं बनती, संघर्षों को अपनाने से ही मंज़िल मिल पाती है। जब हम संघर्ष करते हैं, तभी हमें अपने बल व सामर्थ्य का पता चलता है। संघर्ष करने से ही आगे बढ़ने का हौसला, आत्मविश्वास मिलता है और अंततः हम अपनी मंज़िल को हासिल कर लेते हैं।

संघर्ष जीवन को निखारते हैं, सँवारते व तराशते हैं और गढ़कर ऐसा बना देते हैं, जिसकी प्रशंसा करते जबान नहीं थकती। संघर्ष हमें जीवन का अनुभव कराते हैं, सतत सक्रिय बनाते हैं और हमें जीना सिखाते हैं। संघर्ष का दामन थामकर न केवल हम आगे बढ़ते हैं, बल्कि जीवन जीने के सही अंदाज को, आनंद को अनुभव कर पाते हैं। जिस जीवन में संघर्ष नहीं, वहाँ प्रसन्नता व आनंद भी नहीं टिक पाता। जिस तरह नदी के प्रवाह के सतत संपर्क में रहने से पत्थर के आकार में धीरे-धीरे परिवर्तन हो जाता है और वह कभी इतनी सुंदर आकृति प्राप्त कर लेता है कि पूजनीय हो जाता है, उसी तरह हमारा जीवन भी संघर्ष की तपिश से निखरता है, ऊँचा उठता है और मनोवांछित लक्ष्य को प्राप्त करता है।

(ग) **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ**

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत भारत सरकार ने लड़कियों को बचाने, उनकी सुरक्षा करने और उन्हें शिक्षा देने के लिए निम्न बाल-लिंग-अनुपात को समाप्त करने का लक्ष्य रखा है। यह कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की संयुक्त पहल है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित क्रियाकलाप शामिल किए गए हैं–

- इसके अंतर्गत महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा आंगनवाड़ी केंद्रों पर गर्भावस्था के पंजीकरण को स्थापित करना, भागीदारों को प्रशिक्षित करना, अग्रिम मोर्चे पर काम कर रहे कार्यकर्ताओं एवं संस्थानों को मान्यता देना आदि शामिल हैं।
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा गर्भधारण पूर्व, बच्चे के जन्म के पूर्व जाँच तकनीकों की निगरानी, अनेक अस्पतालों में प्रसव का पंजीकरण, जाँच पटल को मजबूत करना, निगरानी समिति का गठन आदि।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा लड़कियों के विद्यालय में पंजीकरण ड्रॉपआउट दर में कमी लाना, विद्यालयों में लड़कियों की आवश्यकतानुसार सुविधाएँ उपलब्ध कराना, शिक्षा के अधिकार अधिनियम का सख्ती से क्रियान्वयन तथा लड़कियों के लिए शौचालयों का निर्माण करना आदि।

  सरकार द्वारा चलाए गए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत बेटी को बचाना है। उसे पढ़ा लिखा कर योग्य बनाने के लिए जब तक हम संवेदनशील नहीं होंगे, तब तक हम अपना ही नहीं, आने वाली पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक के लिए एक भयानक संकट को निमंत्रण देते रहेंगे। स्त्रियों को जब भी अवसर मिले हैं, उन्होंने अपनी उपलब्धियों के कीर्तिमान स्थापित किए हैं, लेकिन यह सब तभी हो सकता है, जब इन्हें बचाया एवं पढ़ाया जाए।

  देश तभी आगे बढ़ेगा, जब इस देश के युवा लड़के और लड़कियाँ आपस में मिलकर काम करेंगे। हमारे समाज में लड़कियों की तुलना में लड़कों को बेहतर माना जाता है। इस समस्या के कारण ही हमारे देश की लड़कियों को अच्छी पढ़ाई नहीं

मिल पाती है, जबकि दूसरे देशों में हमारे देश की तुलना में महिला को ज्यादा सम्मान दिया जाता है। वहाँ पर लड़कियों को लड़के जैसी सभी सुविधाएँ दी जाती हैं। दूसरे देशों में लड़कों और लड़कियों को पढ़ने की समान सुविधाएँ दी जाती हैं। यही कारण है कि दूसरे देश की महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम करके देश के विकास में अपना योगदान देती हैं। हमें भी अपनी सोच बदलनी होगी और लड़कियों को पढ़ने के लिए हर सुविधा देनी होगी।

13. सेवा में

मुख्य खाद्य निरीक्षक
अ ब स नगर
दिनांक–14/11/2017

विषय– खाद्य वस्तुओं में मिलावट के संदर्भ में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि हम लोगों के अ ब स नगर में कुछ लोग खाद्य वस्तुओं में मिलावट कर रहे हैं तथा साथ ही सिंथेटिक दूध आदि का कारोबार कर रहे हैं। खाद्य पदार्थों तथा दूध जैसी मूलभूत आवश्यकता की वस्तुओं में मिलावट करने से समूचे नगर के नागरिकों एवं बच्चों के जीवन से खिलवाड़ हो रहा है। ऐसा करने वालों के खिलाफ़ जल्द-से-जल्द कड़ी कार्रवाई की जानी आवश्यक है, अन्यथा इस नगर के सभी व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार हो जाएँगे।

नगर के एक जागरुक निवासी के नाते मैं आपको उचित समय पर सूचित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ ताकि आप उचित कार्रवाई द्वारा इसे रोक सकें। ऐसा करने पर हम सभी नगर निवासी आपके प्रति अत्यंत आभारी रहेंगे।

भवदीय
विनय वैश्य
अ ब स नगर

अथवा

कमरा संख्या-16
कावेरी छात्रावास, नई दिल्ली
दिनांक–16/11/2017
आदरणीय भैया,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक रहते हुए आप सभी लोगों की कुशलता की कामना करता हूँ। भैया! आज मेरी पिछली परीक्षा का परिणाम निकल गया और आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि इस बार मैं अपनी कक्षा में दूसरे स्थान पर आ गया हूँ। सभी विषयों में 90 प्रतिशत से ऊपर अंक आए हैं और गणित विषय में 100 में से 98 अंक प्राप्त हुए हैं। अपना परिणाम देखकर मुझे भी अत्यंत खुशी हुई। आज मुझे पता चला कि कुशल मार्गदर्शन व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र में सफलता दिला सकता है।

मेरे जी-तोड़ परिश्रम के अलावा आपका सटीक मार्गदर्शन बहुत काम आया अन्यथा मैं तथ्यों के जंगल में भटकता रहता। आपने सही ढंग से महत्त्वपूर्ण एंव गैर-महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स को छाँटा तथा परीक्षा के दृष्टिकोण से उन्हें पढ़ने एवं प्रश्नों का उत्तर लिखने का तरीका बताया। मुझे आगे भी हमेशा आपके कुशल मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ेगी, जिसके लिए आपको अपना कीमती समय निकालना होगा। यह मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है।

एक बार फिर से कुशल मार्गदर्शन के लिए आपको धन्यवाद ज्ञापित करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

घर के सभी बड़ों को मेरा प्रणाम तथा छोटों को आशीष।

आपका प्रिय भाई
क ख ग

14.

पर्यावरण मित्र

(द्वारा संचालित 'कार पूल')

द्वारिका से दिल्ली गेट तक

सुबह 10 बजे से कार्यालय जाने वाले सभी लोगों को सूचित किया जाता है
कि रविवार छोड़कर प्रतिदिन एक इनोवा गाड़ी द्वारका सेक्टर-6 के मार्केट के पास से दिल्ली गेट के लिए
सुबह 8:45 बजे खुलेगी तथा 9:45 तक दिल्ली गेट पहुँचेगी।

अधिकतम 8 व्यक्ति

पहले आओ
पहले पाओ

प्रतिव्यक्ति ₹ 50/-
जाना-आना दोनों

संपर्क करें–241/B, एकलव्य अपार्टमेंट, सेक्टर-6, द्वारिका मो०–9988xxxxxx

अथवा

स्वावलंबन

(गैर-सरकारी संस्था)

'स्वावलंबन' संस्था समाजसेवी प्रवृत्ति के लोगों को साथ में जुड़ने के लिए आमंत्रित करती है।
यह संस्था पूरे जिले में निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण केंद्र खोलना चाहती है।
आप केंद्र खोलने के लिए स्थान उपलब्ध कराएँ, वहाँ सिलाई मशीन एवं प्रशिक्षक की व्यवस्था हम करेंगे।

इच्छुक व्यक्ति 20-12-2017 तक संपर्क कर सकते हैं।

फ़ोन नं०– 0532-24237xx